हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन

[illegible]

साहित्येतिहास कहलाने के लिए दो बातों की अनिवार्य आवश्यकता है (i) काल क्रमानुसार कवियों का परिचय (ii) सुसंगत काल विभाजन। ये दोनों ही विशेषताएं डॉ० जार्ज ग्रियर्सन की किताब 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान' में उपलब्ध हैं जो 1888 ई० में प्रकाशित हुई थी। सच कहा जाय तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में इसी इतिहास ग्रंथ का उल्लेख किया था।

इसके बाद 1913 ईस्वी में 'मिश्रबन्धु विनोद' नामक विशाल ग्रंथ का प्रकाशन हुआ जिसके रचनाकार तीन भाई - श्याम बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र एवं गणेश बिहारी मिश्र थे। इस ग्रंथ में काल क्रमानुसार साहित्यकारों की जीवनी तथा उनकी रचनाओं का विवेचन विश्लेषण किया गया है। साथ ही काल विभाजन का सार्थक प्रयास किया गया है। ग्रंथ के निरीक्षण करने से ही प्रतीत होता है कि मिश्रबन्धुओं ने साहित्य के क्षेत्र में कैसी महत्वपूर्ण आहुति दी थी। यह ग्रंथ ऐतिहासिक महत्व रखता है तथा कोई भी साहित्यिक इतिहासकार इसे बिना पढ़े आगे नहीं बढ़ सकता। इसमें सामग्री की इतनी प्रचुरता एवं विविधता है कि मिश्रबन्धुओं के श्रम की सराहना किए बिना नहीं रह सकता।

1929 ईस्वी में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' प्रकाशित हुआ जिसे प्रथम प्रामाणिक इतिहास माना जाता है। इस ग्रंथ की सबसे बड़ी विशेषता है जनता की परिवर्तित प्रवृत्तियों के अनुसार साहित्य के स्वरूप में हुए परिवर्तनों का ऐतिहासिक अध्ययन और तदनुरूप उनका काल विभाजन। इस काल विभाजन को प्रायः सर्वमान्य एवं वैज्ञानिक माना जाता है। आचार्य शुक्ल ने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को चार कालखंडों में विभाजित किया है -

वीरगाथा काल - सं 1050 से 1375 तक

Scanned with CamScanner

भक्तिकाल- 1375 से 1700 तक
रीतिकाल- 1700 से 1900 तक
आधुनिककाल- 1900 से अबतक।

आचार्य शुक्ल के बाद इतिहास लेखन में सुधी विद्वानों की रुचि बनी ही रही। इनमें डॉ० राम कुमार वर्मा का हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास- डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी भाषा और साहित्य- डॉ० श्याम सुन्दर दास के इतिहास, डॉ० गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ० रामखेलावन पाण्डेय प्रमुख विद्वानों ने भी साहित्य के इतिहास के क्षेत्र में कलम चलायी। किन्तु ध्यान देने की बात है कि प्रायः सभी विद्वानों ने आचार्य शुक्ल के नामकरण को केन्द्र में रखकर ही अपने ऐतिहासिक विचारों को प्रस्तुत किया है। ऐसे में स्पष्ट है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास एक मानक ग्रंथ के रूप में हमारे सामने उपस्थित है जिसकी चर्चा के बिना कोई भी इतिहास ग्रंथ पूर्ण नहीं होगा।

सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग
एस० एस० कॉलेज, जहानाबाद।